International Journal of Applied Research 2016; 2(3): 645-647

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(3): 645-647
www.allresearchjournal.com
Received: 21-01-2016
Accepted: 22-02-2016

Dr. Dharam Singh
Asstt. Professor Department of B.Ed Vijay Memorial College of Education

Correspondence
Dr. Dharam Singh
Asstt. Professor Department of B.Ed Vijay Memorial College of Education

भारत के प्रमुख शिक्षा– शास्त्रियों स्वामी विवेकानन्द एंव स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन परिचय, शैक्षिक, समाजिक तथा सांस्कृतिक मनाविचारों का अध्ययन।

Dr. Dharam Singh

सार
शिक्षा समाजिक परिवर्तन के लिए एक सुनियोजित प्रयास है तथा शिक्षा शास्त्री उस प्रयास को पूर्तरूप करते है। मनुष्य बुद्धिजीवी प्राणी है और जन्म से ही वह अपने आस–पास के प्रेरणाओं और अनुभवों से शिक्षा प्राप्त करता है। भारतीय दर्शनिकों ने शिक्षा को मुक्ति का साधन माना तभी भारत "विश्व गुरू" की उपाधि से विभूशित हुआ। सम्पूर्ण मानव जाति को एक सुत्र में बांधने की शिक्षा प्रदान करने वाले दर्शनिक स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द सरस्वमी टैगौर, राधा कृश्णन तथा दीन दयाल उपाध्याय आदि आध्यात्मवाद तथा मान वतावाद के समर्थक थे। शोघार्थी ने अपना शोध्कार्य शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित विषय वस्तु को अपना शोध का विषय बनाया है। इस कारण सर्वमान्य दर्शनिक एंव ऐतिहासिक शोध विधि ही कार्य का पूर्ण काने में उपयोंग मे लाई गई है।

खोजशब्द : शैक्षिक, समाजिक, सांस्कृतिक मनाविचारों का अध्ययन

प्रस्तावना
राश्ट्र के उच्च मानवीय मूल्यों युक्त युवा पीढ़ी प्रदान करना शिक्षा का एक महत्वपूर्ण कार्य है। शिक्षा का कार्य मनुश्य को अपने भौतिक एंव आध्यात्मिक पर्यावरण तैयार करना है और शिक्षक का कार्य दन सभी लक्ष्यों को व्यवहार मे मूर्ल रूप प्रदान करना है।
वास्तव में भारत की इस पावन धरती पर ऐसे अनेकों शिक्षा शास्त्रीयों ने जन्म लिया है, जिनकी प्रतीभा को शब्दों की संकुचित सीमा में बॉधा नही जा सकता, इन्होने भारतीय शिक्षा को नये आयम दियें, जिनके कारण भरतीय शिक्षा पद्धति देश में ही नहीं, अपितु विदेशों में भी अपनाई जा रही है तथा इनका जीवन दर्शन समस्त विश्व के लिए अनुकरणीय है। सम्पूर्ण मानव प्रजाति को एक सुत्र में बाधने की शिक्षा प्रदान करने वाले दर्शनिक स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी दयानन्द सरस्वती आध्यात्मवाद, सर्वभौमवाद और मानवतावाद के समर्थक थे।
इतिहास एक विस्मयकारी विषय है तथा महापुरूशों की जीवनी एक और भी एक आश्चर्यजनक विशय हैं, जो बतलाती है कि उन महान हस्तियों ने इतिहास की रूपरेखा को किस प्रकार मोड़ दिया है और अपना एक स्थाई स्थान उस व्यवस्था में बनाया है स्वामी जी, सरस्वती जी जैसे महान व्यक्ति न केवल समाज दर्शनिक के रूप में श्रेश्ठ कहें जा सकते हैं। वरन् शिक्षा दर्शनिकों के रूप में भी उन्होने क्षितिज पर अनकी अमित छाप छोडी है।
अतः हमें अपने राश्ट्र के उन चिन्तकों की विचारधाराओं को आधार बना कर योजना बनानी होगी, जिन्होने सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक संधशों का सामना करते हुए स्वंय को राश्ट्रहित में समर्पित कर दिया। स्वामी विवेकानन्द, स्वामी सरस्वती, गाधी, टैगोर तथा राधाकृश्ण से अधिक उपयुक्त अन्य कोई विचारक हो ही नही सकतें, जिन्होने आध्यात्म व व्यवहार में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास किया हो। इनके विचारों तथा दर्शन को जितनी बार भी पढ़ा है, उतनी बार कुछ नया पाया है। इन शिक्षा शास्त्रीयों के शिक्षा जीवन सम्बन्धी जो विचार उन्होनें दिऐ हैं, उन विचारों तथा सिद्धान्तों को यदि हम वर्तमान समय में अंगीकार करे, तो क्या उचित है या अनुचित। इस दी जॉचना शोध का प्रमुख औचित्य है।

शोध के उद्देश्य
(1) भारत के प्रमुख शिक्षा–शास्त्रीयों स्वामी विवेकानन्द एंव स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन परिचय का अध्ययन ।
(2) भारत मे प्रमुख शिक्षा शास्त्रीयों के समाजिक तथा सांस्कृतिक मनो विचारों का अध्ययन।

शोध विधि

शोधार्थी ने अपना शोध कार्य शिक्षा दर्शन से सम्बन्धित विषय वस्तु को अपना शोध का विषय बनाया है। इस कारण सर्वमान्य दर्शनिक एंव एतिहासिक शोध विधि ही शोध कार्य को पूर्ण करने में उपयोग में ली गई है। इस विधि का उद्देश्य अतित की घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना नही बल्कि उनके जीवन भर के विचार धाराओं के क्रमिक विकास का विश्लेशण करना है, जो कि इतिहास के विभिन्न कालों में उपित एंव विकसित हुए हैं।

समस्या का सीमांकन

(1) प्रस्तुत शोध अध्ययन भारत के प्रमुख शिक्षा शास्त्रीयों स्वामी विवेकानन्द जी एंव स्वामी दयानन्द सरस्वती जी की जीवन परिचय तथा उनके समाजिक, सांस्कृतिक मनो विचारों पर ही केन्द्रित होगा।

(2) ष्यह अध्ययन केवल प्राथमिक तथा गौण दोनों स्त्रोंतों से संग्रहित सूचनाओं पर आधारित होगा।

(3) प्रमुख शिक्षा शास्त्रीयों के जीवन परिचय एंव शैक्षिक समाजिक तथा सांस्कृतिक मनों विचारों का अध्ययन।

स्वामी विवेकानन्द (1)

स्वामी विवेकानन्द का जन्म कलकता के एक बंगाली क्षेत्रिय परिवार मे सन् 1863 हुआ था। इनका वास्तविक नाम नरेन्द्रनाथ दत था। इनके पिता श्री विश्वनाथ दत कलकते के उच्च न्यायलय में एटर्नी (वकील) थे। स्वामी जी की मॉ श्रीमती भुवनेश्वरी देवी भी बड़ी बुद्धिमती, गुणवती, धर्मपरायण एंव परपकारी थी। स्वामी जी पर इनका अमित प्रभाव पड़ा। वे बचपन से ही पूजा पाठ में रूचि लेते थे और ध्यान मगन हो जाते थें। उनकी इसी प्रकृति ने आगे चलकर उन्हें नरेन्द्रनाथ से स्वामी विवेकानन्द बना दिया।

सत वर्श की आयु तक इन्होने पूरा व्याकरण रट डाला । तथा 16 वर्श की आयु में इन्होंने मैट्रीकुलेन की परीक्षा प्रथम श्रैणी में पास की। इसके बाद बाद इन्होनें प्रेसीडेन्सी कॉलेज में प्रवेश लिया और कॉलेज विषयों के अध्ययन के साथ–साथ साहित्य, दर्शन और धर्म का भी अध्ययन किया। अध्ययनशील नरेन्द्रनाथ दत का जीवन बड़ा सयमी था, वे ब्रह्मचार्य का पालन करते थे और प्रार्थना, उपासना और ध्यान में मग्न रहते थे।

नवम्बर सन् 1881 में इन्होने कलकता में ही स्थित दक्षिणेश्वर के मन्दिर में जाने और श्री रामकृष्ण परमहंस के दर्शन करने का सौभाग्य मिला और उनके सत्संग में लीन रहने लगे। इस सत्संग का यह प्रभाव हुआ कि नरेन्द्र नाथ गृहस्थ जीवन मे नहीं फसें। सन् 1886 में भी परमहंस का भी महाप्रस्थान को अपना उतराधिकार देते हुए कहा था –

"आज अपना सब कुछ देकर मैं रंक बन गया हूॅ। मैनें योग द्वारा जिस शक्ति को तुम्हारे अन्दर प्रविष्ट करा दिया है, उसे तुम अपने जीवन में महान कार्य करोगे। अपने इस कार्य को पूर्ण करने के बाद तुम वहां से जाओगे जहॉ से आये हो"। गुरू के महाप्रस्थान के बाद ये उनकी शिक्षाओं के प्रसार कार्य में लग गए। सन् 1888 में ये भारत भ्रमण के लिए निकल पड़े। इस यात्रा में इन्होनें भारत की नंगी तस्वीर देखी और उसकी आत्मिक एकता की अनुभूति की। सन् 1892 में ये दक्षिण भारत के भ्रमण में निकले। यहां के मन्दिर में इन्होंने देवी के दर्शन किए और फिर समुद्र में कूदकर तैरते हुए एक पास की चटट्ान पर जा पहुॅचे और वहां तपस्या में समाधिस्थ हो गए। यहॉ इन्हे एक दिव्य अनुभूति हुई। यहॉ से उन्होने देश–सेवा, दीन– हीन, दलित और उपेक्षित वर्ग के कल्याण साधन का वृत लिया।

सन् 1893 में उन्होंने अमेरिका के शिकागो धार्मिक सम्मेलन में भाग लिया और संसार को भारतीय धर्म दर्शन से परिचित कराया। विश्व के विद्वान इनकी विद्वता से प्रभावित हुए। इस बीच इनकी अनेक पुस्तकों का प्रकाशन भी हुआ। सन् 1897 में से इंग्लैण्ड गए और अनेक स्थानों पर भाशण दिये और वेदान्त का प्रचार किया।

इंग्लैण्ड से भारत लौटकर इन्होने "रामकृष्ण मिशन" की स्थापना की जिसका उददेश्य न केवल वेदान्त का प्रचार करना था, अपितु दीन–दीनों की सेवा के लिए शिक्षा संस्थाएं और चिकित्सालय खोलना भी था। इसी समय उन्होने कलकता स्थित बेल्लूर में एक मठ का निर्माण कराया। थोड़े दिनों के बाद हिमालय में अल्मोड़े से 75 कि0 मी0 की दूरी पर "अद्वैत आश्रम " के नाम से दूसरे मठ का निमार्ण कराया। सन् 1900 में स्वामी जी भारत लौट आए और अवस्वस्थ रहते हुए भी धर्म प्रचार, समाज–सेवा और जन–जागरण के कार्यों में लगे रहे। सेवारत इस व्यक्ति ने अपनी 38 वर्श की अल्प आयु में 4 जुलाई 1902 को निर्वान प्राप्त किया।

महर्शि दयाानन्द सरस्वती (2)

महर्शि दयानन्द सरस्वती का जन्म सन् 1826 में वर्तमान गुजरात प्रदेश के मोखी नामक एक छोटे राज्य में, एक उच्च और सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका वास्तविक नाम मूल शंकर था। इनके पिता श्री कृश्ण लाल तिवारी शिव के बड़े भक्त थे और राज्य के जमींदार पद पर आसीन थे।

मूल जी शिक्षा का आरम्भ उनके घर से ही हुआ। जब वे पॉच वर्श के थे तभी इनके पिता ने इन्हें व्याकरण संस्कृत के ष्लोक और वेद मंत्र कठस्थ कराना शुरू कर दिया था। आठ वर्श की आयु में इनका यज्ञोपवीत सस्कार हुआ और इनके पिता ने इन्हें संध्या उपासना और उपवास आदि के नियमों का कठोरता से पालन करने का आदेश दिया। चौदह वर्श की आयु तक वेदों का अध्ययन कर डाला। और कुछ ही समय में इन्होंने अपने घर तथा गॉव के विद्धान पण्डितों के सहयोग से "निघण्टु तथ निरूक्त" आदि अनेक संस्कृत ग्रस्थों का अध्ययन भी कर डाला।

सन् 1846 में मूल जी ने गृह त्याग दिया और संन्यासी वेश धारण कर अपना नाम शुद्ध चैतन्य रखा। इसी बीच में ये अनेक साधु सन्तों से मिले, लेकिन इन्हे किसी से भी सन्तोश नहीं मिला।

योगाभ्यासी स्वामी पूर्णानन्द मे रहकर इन्होने योगाभ्यास किया। इन्होने ही शुद्ध चैतन्य को "दयानन्द सरस्वती " नाम दिया था। सन् 1861 में ये मथुरा पहॅुचे। यहॉ उनकी भेंट स्वामी विरजानन्द से हुई और इनके शिन्यत्व में स्वामी जी ने 3 वर्श तक गहन अध्ययन करके उनकी जिज्ञासा शान्त हुई। विरजानन्द ने इन्हे अपना उतराधिकरी बनाया और जीवन भर आर्य ग्रस्थों के प्रचार और अनार्थ ग्रस्थों के खण्डन करने का इन्हें आदेश दिया।

स्वामी जी ने यह कार्य सन् 1863 से आरम्भ किया। इस समय देश की धार्मिक एंव सांस्कृतिक स्थिति बड़ी शोचनीय थी। वैदिक धर्म अपने वास्तविक स्वरूप को खो चूका था और लोग धार्मिक अन्धविश्वासों के शिकार हो रहे थे। सन् 1870 में वे कुम्भ मेले में प्रयाग पहॅुचे। यहॉ इन्होंने वैदिक पाठशाला की स्थापना की। अब इनका क्षेत्र केवल वैदिक धर्म के प्रचार तक ही सीमित न रहा। अपितु वे समाज–सुधार, राश्ट्र भाशा हिन्दी के प्रचार और राश्ट्रीय जागरण के कार्य में भी लगे।

सन् 1874 में इन्होने काशी म "आर्य समाज" का संगठन किया। सन् 1875 में उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" प्रकाशित हुई। इसी वर्श राजकोट में इन्होने आर्य समाज की स्थापना की। सन 1875 में वे लाहौर पहॅुचे और बड़े जोर –शोर से आर्य समाज का प्रचार प्रारम्भ किया। उनके जीवन का शेश समय देश की एक भाग से दूसरे भग में जाने और आर्य समाज तथा राश्ट्र भाशा हिन्दी के प्रचार, समाज सुधार और वैदिक पाठशालाओं की स्थापनाओं की

स्थापना में व्यतीत हुआ। 30 अक्टुबर सन् 1883 को ठीक दीपावली के दिन इस महापुरूश ने महाप्रस्थान किया।

शोध का निष्कर्श

"भारत के प्रमुख शिक्षा–शास्त्रीयों की जीवन परिचय सम्बन्धी अध्ययन" का शोध अध्ययन करने से कुछ ऐसे तथ्य सामने आये हैं जिन्हे यदि वर्तमान समाज में अमल मे लाया जाए तो निश्चत ही मानव जाति को सच्चा मानव बननें में यशोचित सहायता प्रदान कर सकते हैं। वर्तमान समाज स्वरूप विभिन्न विभिन्न प्रकार की बुराईयों से गृसित हैं जैसे कन्या भुण हत्या, अधिक धनोपार्जन करना, रूढिवादी आडम्बर, पशुओं के साथ अमानवीय व्यवहार, भारतीय सस्कृंति का त्याग एक दूसरें को नीचा दिखाने की भावना, अभिमान एंव एहकार जैसी कुवृति आदि।

इन महान दर्शनिकों के जीवन से हमें यह प्रेरणा मिलती है संयम एकाग्रता के विकेन्द्रिकरण से प्रतिकुल व जटिल परिस्थितियों का सामना डट कर किया जा सकता है, और मनुश्य के अन्दर नैतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक, व्यावसासिक, सामाजिक मूल्यों का संचरन करने का प्रयास किया जा सकता है।

अतः अन्त में हमें इन महान् शिक्षा शास्त्रीयों के जीवन परिचय से प्रेरणा स्त्रोत की अनुभूति लेते हुए वर्तमान समाज को अच्छी दिशा में ले जाने का प्रयास करेगें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. पाण्डेय, रामशकल – शिक्षा दर्शन, विनोद पस्तक मन्दिर, आगरा
2. सेयदैन, ख्वाजा गुलाम – भारतीय शैक्षिणिक विचारधारा
3. गॉधी, एम. के. – बुनियादी शिक्षा, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद
4. सक्सेना, एन. आर. स्वरूप – शिक्षा दर्शन तथा महान् शिक्षा शास्त्री, आर. एल. बुक डिपो, मेरठ
5. सुखिया, एस. पी. मेहरोत्रा – शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा
6. डॉ. कपिल, एच. के. – अनुसंधान विधियॉ (1994–1995) कचहरी घाट, आगरा
7. कृपलानी, जे.बी. – महात्मा गॉधी जीवन और चिन्तन दिल्ली प्रकाशन मंदिर (1978)
8. डॉ. बघेला, हेत सिंह – शिक्षा सिद्धान्त व आधुनिक भारत में शिक्षा 1993
9. डॉ. पाण्डेय, रामशकल – विश्व के श्रेश्ठ शिक्षा षास्त्री, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा (1999)
10. शर्मा, रामनाथ – समकालीन भरतीय शिक्षा दर्शनिक एटलांटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स (1996)
11. विद्यालंकार, अवनीन्द्र कुमार – राश्ट्रपति राधाकृश्णन् (1965)
12. मिश्रा, डी. के. – गॉधी के विचार
13. मुखर्जी, एम. एन – वर्तमान भारत में शिक्षा, रोपड़ा रोड़, बड़ौदा
14. टैगोर, रविन्द्रनाथ – गीतांजली, (1968), सन्मार्ग प्रकाशन, दिल्ली
15. बुच, एम. बी. – फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशन रिसर्च, बोल्यूम 1, (1988–92)